## 2021

# SANSKRIT [HONOURS]

Paper: IV

Full Marks: 100

Time: 4 Hours

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

- 1. Answer any **five** questions: 1×5=5
  যে-কোনো পাঁচটি প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ
  - a) What is 'त्रयी' according to Kautilya?

    কৌটিল্যর মতানুযায়ী 'त्रयी' বলতে কি বোঝায়?
  - b) Why was वैदेहः करालः perished? वैदेहः करालः क्रिन विनामश्राश्च श्राष्ट्रिलन?
  - c) Mention the name of the commentator of 'मिताक्षरा' commentary on 'याज्ञवल्क्यसंहिता'। 'याज्ञवल्क्यसंहिता'- এत 'मिताक्षरा' টীকাকারের নাম উল্লেখ কর।

- d) "अशोतिभागो वृद्धिः स्यात् मासि मासि सबन्धके"— What is the meaning of the sentence? "अशोतिभागो वृद्धिः स्यात् मासि मासि सबन्धके"—এই বাক্যটির অর্থ কি?
- e) Which topic is furnished in the Chapter-VII of 'मनुसंहिता'?
  কোন্ বিষয়টি 'मनुसंहिता'-এর সপ্তম অধ্যায়ে বর্ণিত হয়েছে?
- f) ''सर्वतेजोमयो हि सः''—Who is 'सर्वतेजोमयो'? ''सर्वतेजोमयो हि सः''—'सर्वतेजोमयो' কে?
- g) "जाङ्गलं शस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम्"—What is the meaning of the word 'जाङ्गलम्'?
  "जाङ्गलं शस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम्"—"जाङ्गलम्'-এই পদটির কি অর্থ?
- Answer any ten questions: 2×10=20
   যে-কোনো দশটি প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ
  - n) What are the characteristic features of the messenger like নিমৃষ্টার্থ?
    নিমৃষ্টার্থ-দূতের বৈশিষ্ট্যগুলি কি কি?
  - b) What are the general features of the লুভ্ঘবর্गs?
    লুভ্ঘবর্গ-এর সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলি কি কি?

- e) ''ম্দ্ন্যৌবিरोधे न्यायस्तु बलवान् व्यावहारतः। अर्थशास्त्रान्तु बलवद्धर्मशास्त्रमिति स्थिति।।''

  —Write the meaning of the above mentioned sloka.
  উপরে উল্লিখিত শ্লোকটির অর্থ লেখ।
- d) What is 'आधि' according to 'याज्ञवल्क्य'? 'याज्ञवल्क्य'-এর মতানুসারে 'आधि' কি?
- e) According to 'याज्ञवल्क्य', what is the monthly interest of mortgaged debt?

  'যাত্সবল্ক্य'-এর মতানুযায়ী সবন্ধক ঋণের ক্ষেত্রে মাসিক বৃদ্ধি বা সুদ কত হবে?
- f) Who is 'प्रतिभू'? How many प्रतिभू's are mentioned by 'याज्ञवल्क्य'?

  'प्रतिभू' কে? 'याज्ञवल्क्य' কতজন प्रतिभू-त উল্লেখ করেছেন
- g) According to Manu which fort is the best for the king and why?

  মনুর মতানুযায়ী রাজার পক্ষে কোন্ দুর্গ শ্রেষ্ঠ ও কেন?
- h) "बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः"—Inspite of being in his boyhood why should a king

- not be ignored of and treated as a mere human being of the common sort?
- ''ৰালাতি নাবদন্বআ দনুष्य इति भूमिपः''—বালক হলেও রাজাকে সাধারণ মনুষ্য জ্ঞানে অবজ্ঞা করা উচিৎ নয় কেন?
- i) ''सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे''—Explain the word 'बाह्मणब्रुव' as furnished by 'मनु' in 'मनुसंहिता'. ''सममब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे''—'मनुसंहिता'-তে মনুকর্ত্ত্বক উপস্থাপিত 'बाह्मणब्रुव' পদটি ব্যাখ্যা কর।
- j) Give the characteristics of 'आन्वीक्षिकीविद्या' after Kauṭilya. কৌটিল্য অনুসারে 'आन्वीक्षिकीविद्या'-র বৈশিষ্ট্যগুলি উপস্থাপিত কর।
- k) Quote the view of 'भारद्वाज' about the selection of ministers (अमात्योपत्तिः) described by Kauṭilya.

  কৌটিল্যবর্ণিত 'अमात्योपत्तिः' বিষয়ে 'भारद्वाज'-এর মতামত উল্লেখ কর।
- 1) "तेन भृता राजानः प्रजानां योगक्षेमवद्धा"—What is the meaning of 'योगक्षेम' as furnished in Arthasastra?

''तेन भृता राजानः प्रजानां योगक्षेमवद्धा''—অর্থশাস্ত্রে উপস্থাপিত 'योगक्षेम' শব্দটির অর্থ কি?

- 3. Answer any five questions: 6×5=30যে-কোনো পাঁচটি প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ
  - a) What are the qualities, importance and duties of a messenger as stated in the 'मनुसंहिता'? 'मनुसंहिता'-তে বর্ণিত দূতের গুণাবলী, গুরুত্ব ও কার্যাবলী কি কি?
  - b) Write a brief note on the 'उपनिधि' after 'याज्ञवल्क्य'.
    - 'याज्ञवल्क्य' অনুসরণে 'उपनिधि' সম্পর্কে সংক্ষেপে লেখ।
  - c) Write a short note on 'संसृष्टी', according to 'याज्ञवल्क्य'। 'याज्ञवल्क्य'-এর মতানুযায়ী 'संसृष्टी' সম্পর্কে সংক্ষেপে লেখ।
  - d) According to 'कौटिल्य', what steps should be taken by a king to win over the dissatisfied ক্সদ্ভবর্गাs?

    কৌটিল্যের মতানুযায়ী একজন রাজা কি প্রকারে অতৃপ্ত ক্সদ্ভবর্গ-দের উপর জয়লাভ করতে সমর্থ হবেন?

Translate into Bengali or English:
वाश्वा अथवा दिः द्राङ्गीर् अनुवान कर्त :
नेति बाहुदन्तीपुत्रः। शास्त्रविददृष्टकर्मा कर्मसु विषादं गच्छेत्।
अभिजनप्रज्ञाशौचशौर्यानुरागयुक्तानमात्यान् कुर्वीत,
गुणप्राधान्यदिति।
सर्वमुपपन्नमिति कौटिल्यः, कार्यसामर्थ्याद्धि पुरुषसामर्थ कल्प्यते।

#### OR

न हि एवं विधं वशोपनयनमस्ति भूतानां यथा दण्ड इत्याचार्याः।

नेति कौटिल्यः। तीक्ष्णदण्डो हि भूतानामुद्वेजनीयः। मृदुदण्डः परिभूयते।

यथार्हदण्डः पूज्यः। सुविज्ञातप्रणीतो हि दण्डः प्रजा धर्मार्थकामैर्योजयति।

f) Explain fully in Sanskrit:

সংস্কৃত ভাষায় ব্যাখ্যা কর ঃ

सर्वो दण्डजितो लोको दुर्लभो हि शुचिर्नरः।

दण्डस्य हि भयात् सर्वजगद् भोगाय कप्लते।।

### OR

नास्य छिद्रं परो विद्याद् विद्याच्छिद्रं परस्य तु। गूहेत् कूर्म इवाङ्गानि रक्षोत् विवरात्मनः।।

- g) Write a short note on 'व्यसन' according to Manu. মনুর মতানুযায়ী 'व्यसन' সম্পর্কে একটি সংক্ষিপ্ত টীকা
- 4. Answer any **three** questions: 12×3=36 যে-কোনো **তিনটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

লেখ।

- a) Write a comprehensive note on 'इन्द्रियजय' after कौटिल्य.
   कौटिल्य-এর অনুসরণে 'इन्द्रियजय'-এর উপর একটি বিস্তৃত আলোচনা কর।
- b) What is 'व्यवहार'? How many divisions are there? Write an elaborate note on 'व्यवहार' after 'याज्ञवल्क्य'. 2+4+6 'व्यवहार' কাকে বলে? এর কটি পাদ বা বিভাগ আছে? 'याज्ञवल्क्य'-এর অনুসরণে व्यवहार-এর উপর একটি বিস্তৃত আলোচনা কর।
- c) "स राजा पुरुषो दण्डः सनेता शासिता च सः"—Justify the quotation with relevant verses.
  "स राजा पुरुषो दण्डः सनेता शासिता च सः"—প্রাসঙ্গিক শ্লোকসহ উক্তিটির যাথার্থ্য নির্ণয় কর।

- d) What is 'षाङ्गुण्य'? When and how can these षाङ्गुण्यs be implemented for the sake of 'राजधर्म'? Discuss after Manu. 2+5+5 षाङ्गुण्य कि? রাজধর্ম পালনের জন্য কখন ও কিভাবে এই षाङ्गुण्य-কে প্রয়োগ করতে হবে, মনুকে অনুসরণ করে আলোচনা কর।
- 5. Summarise the following passage in Sanskrit Language with देवनागरी Script: 9
  देवनागरी-निशिट्ण अनूएष्ट्रमिष्ठ সংস্কৃट्ण সংক্ষিপ্ত कर्न ३
  कश्चित् मेषपालको बालको व्याघ्रमदृष्ट्वापि कौतुकात् 'व्याघ्रोऽयम्' इति मिथ्या उच्चैः शब्दायमास। एवं क्रमेण स्वकार्यात् विरतेषु जनेषु समागतेषु सोऽपि मिथ्यावादी तान् दृष्ट्वा उच्चैर्ज्तास। ततः सत्यं हि एकदा व्याघ्रः समागतः। बालकोऽपि उच्चैस्तान् पुनः पुनरपि आहूतवान्। तत् श्रुत्वापि तस्य वचनं मिथ्या इति वदन्तस्ते तु न समागता।ः

#### OR

अस्ति भारतवर्षे उत्तरस्यां दिशि हिमालयो नाम पर्वतराजः। स पृथिव्या मानदण्ड इव राजते। न केवलं भारतवर्षे एव अपि तु अखिले जगति ये पर्वतास्तेषामुन्नततमः श्रेष्ठश्चायं हिमालयः। अस्य तुङ्गानि शिखराणि सर्वदा हिमेनाच्छ न शोभन्ते। अतोऽयं हिमालय इति नाम भजते।

9